Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

वर्तमान भारत में श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

Akhilesh Chandra Yadav (Research Scholar)
Department of Education, Raja Harpal Singh P G College Singramau, Jaunpur (Veer Bahadur Singh Purvanchal University, Jaunpur)
Dr. Vibha Singh
Guide , Raja Harpal Singh P G College Singramau Jaunpur, U. P., India

Article Info
Accepted : 01 March 2025
Published : 20 March 2025

Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2

Page Number : 32-37

शोध सारांश-प्रस्तुत शोध **"वर्तमान भारत में श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" है।** आचार्य श्रीराम शर्मा जी का शिक्षा दर्शन अत्यन्त सरल एवं व्यवहारिक है। उन्होंने बताया है कि शिक्षा व्यक्तिगत जीवन, समाज परिवार, एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करे तथा बालक को जीवन की यथार्थता से परिचित कराये। व्यक्ति स्वयं को पहचाने तथा अपने चित्त की वृत्तियों का शोधन करना सीखे तभी शिक्षा पद्धति सार्थक सकेगी। वर्तमान में शिक्षा से व्यक्ति एवं समाज की अपेक्षाये अधूरी एवं निराशात्मक है। अत: शिक्षा को जीवन की यथार्थता से जोड़े जाने की नितान्त आवश्यकता हैं शिक्षा पर खर्च होने वाले समय, धन एवं शक्ति का तभी उचित लाभ समाज व राष्ट्र को प्राप्त हो सकता हैं। आचार्य जी द्वारा व्यक्ति उपरोक्त विचार से शिक्षा पद्धति को उपयोगी एवं प्रभाव पूर्ण बना सकते है। "आचार्य जी का व्यक्तित्व महाक्रान्ति का पर्याय बनकर उभरा है। वह उन विरल प्रज्ञा पुरूषों में थे जिनमे ऋषित्व और मनीषा एकाकार हुई थी। जिन्होंने धर्म का आच्छादन तोड़ने दर्शन को बुद्धिवाद के चक्रव्यूह से निकालने की हिम्मत जुटाई, धर्म-दर्शन और विज्ञान के कटु-तिक्त कशाय हो चुके सम्बन्धों की अपनी अन्तर्प्रज्ञा की निर्झरिणी से पुन: मधुरता प्रदान की। अवतारी प्रवाह सदा एक ही लक्ष्य सामने लेकर आते रहे है समय की दार्शनिक भ्रष्टता को दूर कर उसे उच्च स्तरीय चिन्तन स्तर तक घसीट ले जाना।" देश के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों पर जो अन्धकार और निराशा हमे घेरे हुए है उनमें आशा की किरण आचार्य श्री राम शर्मा के शैक्षिक विचारों के द्वारा ही प्रकाशित हो सकती है। उनका शिक्षादर्शन वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति आचार्य श्री राम जी के विचारों से प्रेरणा ले।

मुख्य शब्दावली: वर्तमान भारत, आचार्य श्रीराम शर्मा, शैक्षिक विचार, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, गुरु शिष्य सम्बन्ध आदि।

प्रस्तावना: इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नही, पूरी वसुधा के उद्वार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनो का नये सिरे से निर्माण करने आती है। परमपूज्य गुरूदेव पं श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरू एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई। अस्सी वर्ष का जीवन एक विराट ज्योति प्रज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग-परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है। परमवन्दनीया माता जी शक्ति का रूप थी, जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी माँ शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है। उसने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का अंग स्वयं को बना लिया। आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुन्ज, ब्रह्मा वर्चस्व, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ ऑवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानीगणों के वीरभ्रदों की करोड़ो से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है।"

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् 1967 (20 सितम्बर, 1911) की स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम, जनपद आगरा, जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पन्द्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता। वे जन्में तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता श्री पुं रूपकिशोर जी शर्मा आस-पास के, दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अन्त:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था। साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा। जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे, छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उन्होंने सम्बन्धियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वही वे जा रहे थे। किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं किशोरावस्था मे ही समाज सुधार को रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उसने चलाना आरम्भ कर दी थी। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु उन्हें इसके बाद आवश्यक भी नहीं थी। क्योंकि जो जन्मदाता प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखे तथा स्वायलम्बी कैसे बने इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नही थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव मे जन्में इस लाल ने नारीशक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया वह उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाएँ, अपने पैरो पर कैसे खड़ा हुआ जाएँ यह सिखाया। स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमे शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जनआक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोरकाल की क्रान्तिकारी स्थिति की तरह उन्होंने भी वे कार्य किये, जिनमे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था। नमक आंदोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्रदेवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आंदोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं। "1935 के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरूदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शान्तिनिकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाये, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत चलाते हुए उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया, जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक, सम्पादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाबराय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए युग निर्माण योजना व 'युगनिर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणापत्र 1963 में प्रकाशन हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तरह की निवासस्थली बन गया, जहाँ रहकर उन्होंने अपनी शेष तप-साधना पूरी की थी, श्रीराम शर्मा आचार्य भारत के एक युगदृष्टा मनीषी थे जिन्होंने अखिल भारतीय गायत्री परिवार की स्थापना की। उन्होंने अपना जीवन समाज की भलाई तथा सांस्कृतिक व चारित्रिक उत्थान के लिये समर्पित कर दिया। उन्होंने आधुनिक व प्राचीन विज्ञान व धर्म का समन्वय करके आध्यात्मिक नवचेतना को जगाने का कार्य किया ताकि वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना किया जा सके। उनका व्यक्तित्व एक साधु पुरूष अध्यात्म विज्ञानी, योगी दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक लेखक, सुधारक, मनीषी व दृष्टा का समन्वित रूप था।

आचार्य श्री राम शर्मा के अनुसार शिक्षा का अर्थ: "सुसंस्कारिता का प्रशिक्षण हैं इसे नैतिकता, सामाजिकता, सज्जनता, प्रामाणिकता आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। नैतिक शिक्षा अलग नाम दे देने से तो वह शिक्षाशास्त्र की एक विद्या बनकर रह जाती है। उसे तो शिक्षा का एक अभिन्न अंग मानते हुए सुसंस्कारिता का व्यावहारिक शिक्षण मानकर, उसे समग्र शिक्षण में गुँथकर चलना चाहिए। शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब वह शिक्षार्थी को मानवी गरिमा के अनुरूप सत्प्रवृत्तियों से अभ्यस्त करा सके। क्योंकि उसी के आधार पर संबद्ध कार्यों में सफलता

मिलती है। तीक्ष्ण बुद्धि का होना संयोग की बात है। वह किसी में जन्मजात रूप से होती है, किसी में परिश्रम करने पर भी थोड़ी मात्रा में बढ़ पाती है। किंतु चिंतन और चरित्र में सत्प्रवृत्तियों का समावेश होना, यह पूरी तरह शिक्षण का विषय है।

आचार्य श्री राम शर्मा जी के अनुसार शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध: शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में जिस मधुरता, सहजता और अन्योन्याश्रितता की भावना पर बल दिया है, वह आज के युग में अत्यन्त आवश्यक है। आचार्य जी के अनुसार शिक्षक अपनी गरिमा व कार्य के महत्व को समझे तथा उसी के अनुरूप पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कार्य करें, ताकि अपने सम्मान को प्राप्त कर सकते है। छात्र अध्यापक के आचरण व व्यवहार से प्रभावित होते हैं, अत: अध्यापक अपने आचरण व ज्ञान से अच्छे मानव के रूप में बालकों का निर्माण करे। अत: अपने पद के अनुरूप अध्यापक को अपने कर्त्तव्य को समझना ही होगा तभी शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में पुन: सहजता का प्रवेश हो सकेगा। शिक्षक के सम्बन्ध में आचार्य जी के विचारों से प्रेरणा लेकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन क्रान्ति को जन्म दिया जा सकता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार पाठ्यक्रम: वर्तमान में इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की जा रही है कि जीवन के आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। इसके लिए आचार्य श्री राम द्वारा अत्यन्त व्यवहारिक पाठ्यक्रम के निर्माण की सन्तुष्टि की गयी है। प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम मूल्यों एवं जीवन में काम आने वाली समझदारी, ईमानदारी, बहादुरी, एवं नैतिक शिक्षा आदि हो अत: आचार्य जी के विचारों के अनुसार वर्तमान में पाठ्यक्रम को नैतिक मूल्यों, क्रियाशीलता व व्यवहारिकता से जोड़कर प्रस्तुत करने से जीवन के आवश्यक मूल्यों की पुन: स्थापना होने की सम्भावना है। वास्तव में पाठ्यचर्या शिक्षक और छात्र के बीच एक सेतु की भूमिका निभाती है। इसलिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण और मूल्यवान पहलू है। पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य पूर्व निर्धारित प्रणाली के आधार पर एक विशिष्ट विषय की समझ प्रदान करना है, छात्र को विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और विषय में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो छात्र की छिपी प्रतिभा को उजागर करे। पाठ्यक्रम में नकारात्मकता और संकीर्णता नहीं होनी चाहिए किसी भी तरह से किसी विशेष धर्म, जाति या समूह पर नकारात्मक विचारों को पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम को प्रतिबंधित न करने के लिए ध्यान रखा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य ऐसे नागरिकों को तैयार करना होना चाहिए जो वहां के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें। समाज और राष्ट्र में उदारता, सहनशीलता, सहयोग, उच्च विचार और सद्गुणों को आत्मसात करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण करते समय समता का सर्वव्यापक भाव, सइच्छा और वैज्ञानिक मनोवृत्ति हो, यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि सभी प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और प्रसिद्ध हस्तियां इस साँचे के उत्पाद हैं जिन्हें पाठ्यक्रम कहा जाता है। इसलिए इसे बनाते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए।

आचार्य श्रीराम जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य: व्यक्तित्व का सर्वांगीण अन्तर्निहित गुणों का विकास स्वावलम्बन व्यक्तित्व का निर्माण तथा सामाजिक सदभावना का विकास करना है।

शिक्षण विधि: शिक्षण विधियों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्ति हेतु व्याखान तर्क विचार-विमर्श, स्वानुभव, स्वास्थ्य आदि विधियों को आचार्य जी ने महत्वपूर्ण माना है तथा चितवृत्तियों के शासन व मन व केन्द्रीयकरण के लिए व्रताभ्यास, योग, ध्यान, व्यायाम खेलकूद आदि विधियों को आवश्यक माना है। छात्रों के उचित शारीरिक, मानसिक व भावात्मक विकास हेतू आचार्य जी द्वारा बताई गई शिक्षण विधियों का प्रयोग सफल सिद्ध हो सकता है।

अनुशासन: अनुशासनहीनता की समस्या आज देशव्यापी बन चुकी है, इसके लिए आचार्य श्री राम शर्मा का कहना है कि अनुशासन के बीज बालको से प्रारम्भिक अवस्था से ही बो दिये जाने चाहिए। पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनुशासन का अभ्यास कराया जाये। मानसिक शून्यताओं में जन्मी हीन भावना को दबाने के लिए ही अयोग्य छात्र अनुशासन हीनता करते हैं अत: छात्रों में श्रम के प्रति आस्था एवं सामाजिक व नैतिक मूल्यों में दृढ़ विश्वास जगाना होगा। इसके लिए आचार्य जी ने पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद, स्काउटिंग, श्रमदान आदि क्रियाओं को अनुशासन के विकास में सहायक बताया है। अनुशासन को आत्म नियंत्रण से आत्म स्वामित्व का विकास उन्होंने बताया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों में आत्मानुशासन का विकास ही अनुशासन के भाव को दृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

परीक्षा प्रणाली: शिक्षा की वर्तमान प्रणाली में व्यक्तित्व विकास की प्राचीन समग्रता के अवयवों का अभाव है। आजकल छात्रवृति का समय और उद्देश्य केवल एक निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सिमट कर रह गया है। जहां एक ओर छात्र इसे अपनी संस्थागत जिम्मेदारी मानता है, वहीं शिक्षक अपने अभिभावकों से अलग होने की अवधि से उत्पन्न भावनात्मक शून्य को नहीं भरते हैं। पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण पहलू जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वह मूल्यांकन की प्रक्रिया है। इन दिनों, मूल्यांकन छात्र की याद रखने की क्षमता का परीक्षण करने तक ही सीमित है। मूल्यांकन एक छात्र के व्यक्तित्व, सोच, चरित्र, व्यवहार, विषय की मौलिक समझ, अनुसंधान के लिए योग्यता और ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग के आधार पर किया जाना चाहिए। किसी भी मूल्यांकन के लिए केवल विषय को रट लेना ही एकमात्र मानदंड नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी को समाज के कल्याण के लिए अपने ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग को भी समझना चाहिए। यह तब प्राप्त किया जा सकता है जब परीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया में बड़े बदलाव आते हैं। यह सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द किया जाना चाहिए। आचार्य शर्मा के अनुसार वर्तमान परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। यांत्रिक परीक्षा बच्चे की सर्वांगीण प्रगति का मूल्यांकन नहीं कर सकती है। एक ऐसी परीक्षा की सिफारिश की जाती है जो स्वत:स्फूर्त हो और जो बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करती हो। परीक्षा साप्ताहिक या मासिक होनी चाहिए। मौखिक कार्य पर अधिक बल देना चाहिए। परीक्षा में भ्रष्टाचार की भी जांच होनी चाहिए।

शिक्षण पद्धति: शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल पद्धति पंडित आचार्य द्वारा पसंद की गई थी। शिक्षण की गुरुकुल पद्धति शिक्षक और शिष्य के सहकारी प्रयास पर आधारित है। यह स्वस्थ शिक्षक द्वारा सिखाए गए संबंधों का मार्ग प्रशस्त करता है जो दोनों के लिए फायदेमंद है। वह सार्वजनिक लाभ के लिए वस्तु उद्यमिता शिक्षा कार्यक्रम का भी समर्थन करता है जो लोगों की शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा पर जोर दिया। इसके अलावा वह चर्चा पद्धति, करके सीखने, जीवन से सीखने, अनुभव से सीखने, स्वाध्याय, सत्संग, सामाजिक भागीदारी आदि के पक्षधर हैं।

स्त्री शिक्षा : नारी शिक्षा के सम्बन्ध में भी आचार्य जी के विचार वर्तमान समय में प्रेरणा के श्रोत है, वे चाहते थे नारी शिक्षा प्राप्त करके स्वावलम्बी बने किन्तु ही गृहविज्ञान, शिशुपालन संगीत आदि की शिक्षा भी प्राप्त करे। श्रेष्ठ नारीत्व के गुणों की रक्षक एवं संवाहक शिक्षित नारी बने। फैशन परस्ती व अहंकार से स्वयं को बचाते हुए परिवार, समाज व राष्ट्र की प्रगति में अपनी भूमिका सार्थक करे। वास्तव में शिक्षित नारी यदि आचार्य जी के विचारों के अनुरूप जीवन-निर्माण करेगी, तो राष्ट्र की प्रगति तेजी से हो सकेगी।

धार्मिक शिक्षा: धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में आचार्य श्री राम शर्मा जी धर्म के अत्यन्त व्यवहारिक स्वरूप को बताया गया है उनके द्वारा दिये गये 'युग धर्म के दस लक्षण' व्यवहारिक नीति नियमों का वर्गीकरण है, जो बालकों के नैतिक, चारित्रिक धार्मिक, सामाजिक, व्यक्तिगत विकास हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

प्रौढ़ शिक्षा: किशोरावस्था के दौरान, किशोर श्रीराम ने एक ऐसी गतिविधि शुरू की जिसे क्रान्तिकारी" कहा जा सकता है क्योंकि वयस्क शिक्षा से पहले किसी ने ऐसा नहीं किया था। दोपहर करीब 4 बजे श्रीराम गांव के बुजुर्गों को इकट्ठा कर उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाते। उनके लिए वे बड़े-बड़े टाइप की छपी किताबें लाते थे। वह उन्हें भगवान के महत्व और भगवान के नाम में छिपी शक्ति के बारे में भी बताते थे और भगवान के नाम के जाप से मोक्ष कैसे प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने यह भी समझाया कि भगवान का नाम लेने से भी ज्यादा बार-बार भगवान का नाम लिखने का महत्व है। वह ग्रामीणों को इतना समझाने में सक्षम था कि वे इच्छुक शिष्य बन गए। 18 महीने के भीतर 40 बुजुर्गों ने उनसे वह सब सीखा जो उन्होंने 3 साल में गुरुकुल में सीखा था। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य प्रौढ़ शिक्षा के प्रबल समर्थक हैं। उनके अनुसार प्रौढ़ शिक्षा बच्चों से अधिक महत्वपूर्ण है। वे शिक्षकों और प्रभावी पाठ्यक्रम द्वारा अशिक्षा, अज्ञानता, असामाजिकता, जातिवाद, सांप्रदायिकता आदि को जनता से दूर करना चाहते थे। वयस्कों के लिए उनके द्वारा पाठ्यपुस्तकें लिखी और प्रकाशित की जाती हैं। वे केवल 3 आर (पढ़ना, लिखना, अंकगणित) का ज्ञान प्रदान करना नहीं चाहते थे बल्कि पूरे व्यक्तित्व को साक्षरता प्रदान करना पसंद करते थे। उनकी वांग्मय शिक्षा और विद्या के अनुसार निम्नलिखित विषयों को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष: आचार्य श्रीराम शर्मा ने वैदिक युग के अग्रणी ऋषियों के सुधारात्मक और रचनात्मक प्रयासों के एक साथ पुनर्जागरण और विस्तार के माध्यम से ऋषि संस्कृति के पुनरुत्थान का बीड़ा उठाया। उन्होंने शेष विश्व के लिए भारत की दैवीय संस्कृति के अमर योगदान की समीक्षा की और गायत्री परिवार की अनेक गतिविधियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्वों और इसके दैवीय स्वरूप की जड़ों को नई वैज्ञानिक रोशनी में पोषित और पुनरू स्थापित करने का प्रयास किया। आचार्य भक्ति योग, ज्ञानयोग, कर्मयोग आदि सभी योग पद्धितियों को सम्मिलित रूप प्रदान करते हुए समग्र योग के माध्यम से आने वाले सभी साधकों को यौगिक जीवन जीने की ओर अग्रसर करते रहे। माँ गायत्री की भक्ति के माध्यम से भक्ति योग, प्रवचनों एवं गोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान योग की अविरल धारा इनके माध्यम से बहती रही जो आज भी किसी न किसी रूप में सुनी सुनाई जाती है।

उन्होंने हिंदू धर्म में वर्णित उच्चतम प्रकार की साधनाओं का सफलतापूर्वक अभ्यास किया और उनमें महारत हासिल की। उन्होंने गायत्री मंत्र और योग के दर्शन और विज्ञान का सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया। संक्षेप में कहें तो, उन्होंने आध्यात्मिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को सिद्ध किया। उनके द्वारा प्रज्ज्वलित ज्ञान और मानवीय गौरव की दिव्य रोशनी शांतिकुंज के तत्वावधान में उनके महान मिशन के उत्कृष्ट पथ को रोशन कर रही है और आने वाले वर्षों में "सत्य के युग" की शुरुआत का भरोसा प्रदान करती है। उन्होंने धर्म, जाति, पंथ, लिंग या सामाजिक स्थिति के किसी भी भेदभाव के बिना लाखों लोगों के आध्यात्मिक और बौद्धिक परिष्कार के कार्यक्रम शुरू किए। भारतीय संस्कृति और धार्मिक दर्शन के अपने गहन अध्ययन के एक भाग के रूप में, उन्होंने तीर्थयात्रा के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक महत्व को फिर से खोजा। उन्होंने हमें सिखाया कि जनता के कल्याण के लिए वर्तमान समय में तीर्थों के प्राचीन गौरव और वास्तविक उद्देश्य को कैसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। गुरुदेव का मानना था कि आधुनिक मनुष्य को प्राचीन आध्यात्मिकता द्वारा संरक्षित जीवन मूल्यों को स्वीकार करने के लिए तब तक राजी नहीं किया जा सकता जब तक कि ये व्यक्ति व समाज के कल्याण के लिए वैज्ञानिक रूप से व्यवहार्य साबित न हो जाएं।

यदि हम आचार्य के शिक्षा संबंधी विचारों का समग्रता में अवलोकन करें तो यह निष्कर्ष सहज निकलता है कि आचार्य के शैक्षिक विचार आदर्शवाद, प्रकृतिवाद एवं प्रयोजनवाद का मिला–जुला रूप है। एक तरफ तो वे उन्मुक्त शैक्षिक वातावरण के माध्यम से अपने को प्रकृ तिवादी साबित करते हैं तो दूसरी तरफ चरित्र निर्माण एवं आदर्श विचार के प्रस्फूटन को शिक्षा का उद्देश्य बताकर आदर्शवादी बन जाते हैं। स्वावलंबन, उद्योग शिक्षा, श्रम की महत्ता, आर्थिक उपार्जन में शिक्षा की भूमिका के माध्यम से तीसरी तरफ वो प्रयोजनवादी दिखाई देते हैं। वे गाँधी की तरह ही शिक्षा को अर्जन से जोड़कर देखते हैं और मानते हैं कि शिक्षा वह है जो व्यक्ति को सबल एवं सशक्त बनाती है। उनके शिक्षा संबंधी विचार न केवल प्रासंगिक है, बल्कि उपयोगी एवं आवश्यक भी है। शिक्षण विधि एवं पाठ्यक्रम निर्माण की पाठ्य–वस्तु के चुनाव में उनके विचारों का समावेशन होना ही चाहिए।

सुझाव:

1 प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश 6 वर्ष से कम में नहीं होना चाहिए अन्यथा यह बच्चे के मन पर बोझ होगा। प्रारंभिक शिक्षा की जिम्मेवारी माँ–पिता एवं परिवार की होनी चाहिए।

2 स्कूल के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा, यात्रा, रेलवे, बैंकिंग, डाक, व्यवसाय, राजनीति आदि को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि छात्र अपने दैनिक गतिविधियों में जागरूक हो सकें।

3 उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण वार्षिक परीक्षा पर नहीं बल्कि विद्यार्थियों की विभिन्न गतिविधियों की मासिक प्रगति पर निर्भर होना चाहिए।

4 निजी परीक्षाओं में लगे निजी अभ्यर्थियों को बिना किसी मजबूत धारणा के उनके सुधार की गुंजाइश की जानी चाहिए।

5 सभी प्रांतों में शिक्षा की एक सामान्य राष्ट्रीय प्रणाली लागू की जानी चाहिए ताकि शिक्षकों और छात्रों के लिए आसान और स्वीकार योग्य बनाया जा सके।

6 पाठ्यचर्या पर बहुत सारी पुस्तकें नहीं बल्कि कुछ उपयोगी पुस्तकें होनी चाहिए।

7 शिक्षकों और छात्रों दोनों के वस्त्र, स्वच्छता, आदतों, सोच, व्यवहार और चरित्र पर जोर देना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा शिक्षक गरिमा मार्गदर्शिका, हरिद्वार, उत्तराखंड, तीर्थ, शांतिकुंज, पृष्ठ सं. 12-13. गायत्री,
2. षडंगी, आर.के. कौर, (2006), मन केमिटी देवता हेबा, हरिद्वार, उत्तराखंड, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, पृ. 35. .
3. जोशी, आर. (2005). स्पेक्ट्रम ऑफ नॉलेज की टू द आर्ट ऑफ लिविंग, युग निर्माण योजना, मथुरा, यू.पी., पृष्ठ सं. 255-259, 298.
4. प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ (2011). व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर कार्यकर्ता मार्गदर्शिका, अंचल कार्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ पृष्ठ सं. 86.
5. सहाय, टी.एन. (2010). प्रोब्लेम्स ऑफ टुडे, सोल्यूशन फॉर टुमारो (पंडित श्रीराम शर्मा की हिंदी पुस्तक "समस्याएँ आज की समाधान कलक" का अंग्रेजी अनुवाद) मथुरा, लोक-युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ सं. 9-11, 42-43.
6. शर्मा, श्रीराम (1998). शिक्षा और विद्या (वांग्मय खंड संख्या 49), मथुरा, अखंड ज्योति संस्थान, पृष्ठ सं. 40-43.
7. अखिल विश्व गायत्री परिवार (2023).
8. https://www-awgp-org/about us/shantikunj/shivir programs- 14 मई को पुन:प्राप्त 2023.
9. महती, बी. (2010). पडित श्रीराम शर्मा द्वार प्रतिपादित विचार क्रांति की उपयोगिता एक अध्ययन, शोध प्रबंध, स्कूल ऑफ योग एड हेल्थ डी. एस वी वी पृष्ठ 95-110